प्रस्तावना

तकनीकी शिक्षा किसी भी देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यदि किसी देश के पास तकनीकी ज्ञान के साथ–साथ प्रशिक्षित श्रमशक्ति है, तो निसंदेह वह देश विकास के मार्ग पर तेजी से अग्रसर हो सकता है।

तकनीकी शिक्षा निर्विवाद रुप से राष्ट्र की आर्थिक स्थिति को बढावा देती है। यदि किसी राष्ट्र में पर्याप्त तकनीशियन न हो अथवा नवीनतम तकनीक नहीं हो तो उस देश को अन्य देशों से नवीनतम तकनीक में प्रशिक्षित श्रमशक्ति एवं तकनीक किराये पर लेनी पडती है,जिसके लिये उसे अन्य देशों को अधिक पैसा देना पडता है। इस प्रकार प्राप्त की गई श्रमशक्ति एवं तकनीक अत्यंत महगी होती है।

भूमंडलीकरण के इस दौर में विगत वर्षो में कई देशों के उद्योगपतियों द्वारा भारत में उद्योग स्थापित किये जा रहे है,जिनमें नवीनतम तकनीक का प्रयोग जा रहा है। प्रयोग की जा रही तकनीक में प्रशिक्षित युवाओं का हमेशा से उद्योगों में अभाव रहा है,जिस कारण उद्योगों को अपनी श्रमशक्ति को पहले प्रशिक्षित करना पडता है। इसका सीधा प्रभाव उत्पादो की दरो पर पडता है।

छात्र/छात्राओं को गुणवत्ता एवं रोजगार परक शिक्षा देने के लिये संयुक्त प्रवेश परीक्षा एवं प्रशिक्षण,अनुसंधान विकास प्रकोष्ठ की स्थापना वर्ष 2011 में की गई। तकनीकी शिक्षा के विकास में संयुक्त प्रवेश परीक्षा एवं प्रशिक्षण,अनुसंधान विकास प्रकोष्ठ,देहरादून निरन्तर प्रयासरत्त है तथा इसके विकास हेतु प्रकोष्ठ द्वारा निम्न कार्य किये जा रहे है–

- उद्योग की मॉग के अनुसार नवीनतम पाठ्यचर्या निर्धारण करना।
- कार्याशालाओं/प्रयोगशालाओं को अद्यावधिक रूप से विकसित करना।
- शिक्षकों तथा संस्थाध्यक्षों को अद्यावधिक पाठ्यचर्या एवं प्रयोगशालाओं का प्रशिक्षण प्रदान करना।
- प्रशिक्षण हेतु प्रशिक्षण मॉड्यूल तैयार करना।
- तकनीकी शिक्षा के समग्र विकास हेतु शोध, अनुसंधान एवं मूल्यांकन करना।
- राज्य के बाहार शोध, अनुसंधान के साथ समन्वय एवं आदान–प्रदान करना।
- उक्त के अतिरिक्त प्रकोष्ठ द्वारा कौशल विकास से सम्बंधित योजनाओं का संचालन एवं अनुश्रवण किया जा रहा है।

प्रकोष्ठ का निरन्तर यह प्रयास रहा है कि डिप्लोमा स्तरीय पाठयचर्या को रोजगार सृजन से जोडा जाय। इसी क्रम में प्रकोष्ठ द्वारा उद्योगो से संपर्क स्थापित कर उनकी आवश्यकता की जानकारी प्राप्त की गई। इसी संदर्भ में प्रकोष्ठ द्वारा समय–समय पर विभिन्न विषय के विशेषज्ञों एवं पाठयचर्या विकास समितियों के साथ कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। पाठयचर्या को अंतिम रुप देते समय कार्यशालाओं में प्राप्त सुझावों को सम्मिलित किया गया।

संयुक्त प्रवेश परीक्षा एवं प्रशिक्षण,अनुसंधान विकास प्रकोष्ठ का पाठयचर्या विकास के दौरान यह प्रयास रहा है कि वर्तमान में उद्योगों में प्रचलित विभिन्न नवीन तकनीक का

समावेश पाठयचर्या में किया जाये,जिसके लिये संस्थान द्वारा विभिन्न उद्योगों के विशेषज्ञों को कार्यशाला में आमंत्रित कर उनसे प्राप्त सुझावों को पाठयचर्या में सम्मिलित किया गया। तैयार की गई पाठयचर्या को 3 माह के लिये प्रकोष्ठ के पोर्टल पर उद्योगों एवं विभिन्न शासकीय विभागों के सुझावों हेतु उपलब्ध कराया गया। पाठयचर्या को मॉग के अनुसार बनाने के लिये देशभर से विभिन्न सरकारी एवं निजी संस्थानों से सुझाव प्राप्त हुये,जिनका समावेश पाठयचर्या में किया गया। इसी संदर्भ में उरेडा द्वारा गैर पारम्परिक ऊर्जा श्रोतो को पाठयचर्या में सम्मिलित करने का सुझाव दिया गया,जिसे आज की अवश्यकता की देखते हुये पाठयचर्या में सम्मिलित किया गया है।

तकनीकी शिक्षा को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की गुणवता प्रदान करने के उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा एन0एस0क्यू0एफ0 तैयार किया गया है ,जिसमें कि कौशलता को विभिन्न स्तर पर मूल्यांकित किया जाता है। एन0एस0क्यू0एफ0 के अन्तर्गत कौशलता का मापदण्ड निम्न रुप से निर्धारित किया गया है :–

1. प्रक्रिया, 2 पेशेवर ज्ञान, 3 पेशेवर दक्षता, 4 मुख्य कौशल, 5 जिम्मेदारी।

उपरोक्त पाँच मापदण्डो के अधीन प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले छात्र/छात्राओं का मूल्यांकन किया जाता है।

National Skills Qualifications Framework (NSQF) की महत्ता को देखते हुये संयुक्त प्रवेश परीक्षा एवं अनुसंधान विकास प्रकोष्ठ देहारादून द्वारा Framework के अनुसार Credit Point System लागू किया जा रहा है,जो कि Learning Based Outcome पर आधारित है।

इस प्रकार प्रकोष्ठ द्वारा प्रयास किया गया है कि छात्र/छात्राओं को अध्ययन के दौरान नवीनतम तकनीकी शिक्षा में प्रशिक्षित किया जाये ताकि प्रशिक्षण समाप्ति के उपरान्त उन्हे सरकारी एवं सार्वजनिक क्षेत्रों में रोजगार के पर्याप्त अवसर प्राप्त हो, साथ की जो छात्र/छात्रा प्रशिक्षण के पश्चात स्वरोजगार को अपनाना चाहते हो उन्हे नवीनतम तकनीकी के अनुसार स्वरोजगार को शुरु करने में आसानी हो।

मै पाठयचर्या प्रकाशन के इस अवसर पर श्री ओमप्रकाश,अपर मुख्य सचिव,तकनीकी शिक्षा,उत्तराखण्ड शासन एवं अध्यक्ष,उत्तराखण्ड प्राविधिक शिक्षा का विशेष आभार व्यक्त करना चाहूगॉ,क्योकि उनके बहूमूल्य मागदर्शन के बिना पाठयचर्या विकास को अंतिम रुप दिया जाना सम्भव नहीं था।

(डा0मुकेश पाण्डेय)
संयुक्त सचिव